श्रीराम अस्पताल पर कब्जे को 20 दिन हुए, नहीं शुरू हो सका कोविड सेंटर

प्रशासन और राजनीतिक लोगों की मदद से कंवल खत्री गुट डुप्लीकेट चाबियों से घुसा था अंदर

मजदूर मोर्चा ब्यूरो

फरीदाबाद: प्रशासन की मदद से श्रीराम धर्मार्थ अस्पताल पर कब्जा जमाए 20 दिन से ज्यादा हो चुके हैं लेकिन कंवल खत्री गुट अभी तक वहां पर कथित कोविड सेंटर नहीं शुरू करा सका है। विधायक सीमा त्रिखा अपने कीमती समय में से यहां काफी वक्त बिता रही हैं। छोटे-छोटे कार्यक्रमों में उन्हें बुलाया जाता है और उनके साथ उनके चेले-चपाटे भी आ जाते हैं।

नगर निगम फरीदाबाद ने जिस एसडीओ को यहां का प्रशासक नियुक्त किया है, उनका कहना है कि अस्पताल चलने या न चलने में हमारी कोई भूमिका नहीं है। हमे तो सरकारी जमीन की रक्षा करनी है और वहां किसी की दुकानदारी नहीं चलने देनी है। बाकी सामाजिक संस्थाएं वहां क्या कर रही हैं, हमें उस राजनीति से कोई मतलब नहीं है। इस बीच श्रीराम चेरिटेबल सोसायटी के उपाध्यक्ष विशाल भाटिया ने अपने वकील के जरिए सीएमओ और अन्य अधिकारियों को नोटिस भेजा है कि जब उन्होंने यहां कोविड सेंटर बनाने की मांग की तो उस पर क्यों नहीं गौर किया गया और एक निलंबित और गैरकानूनी प्रधान की अर्जी पर यहां कोविड सेंटर कैसे शुरू किया जा रहा है। हालांकि अब तो शहर में कोरोना की रफ्तार भी थम सी गई है।

एक साल पुरानी एम्बुलेंस का उद्घाटन

हाल ही में कंवल खत्री गुट ने यहां विधायक सीमा त्रिखा के हाथों रोटरी क्लब द्वारा एक साल पहले भेंट की गई एम्बुलेंस का उद्घाटन करा डाला। इस मौके पर रोटरी क्लब के पदाधिकारियों को बुलाकर तमाम तरह के दावे किए गए और विधायक सीमा त्रिखा ने इस मौके पर कहा कि वो दो दिन में यहां कोविड सेंटर शुरू कराने जा रही हैं। हालांकि उनकी इसी बात को कहे हुए 15 दिन बीत चुके हैं लेकिन यहां पर किसी तरह का कोविड सेंटर शुरू नहीं हो सका।

अभी तीन दिन पहले आईएमए ने श्रीराम धर्मार्थ अस्पताल के लिए विदेश से आए 20 आक्सीजन कंसनट्रेटर भेंट किए हैं। ये कंसनट्रेटर अमेरिका से किसी फरीदाबादी परिवार ने भेजे हैं, जिन्हें अब आईएमए बांट रहा है। कोविड सेंटर शुरू न होने से यहां आए आक्सीजन कंसनट्रेटर ऐसे ही रखे हुए हैं। अगर सरकारी आंकड़ों को देखा जाए तो गुरुवार 20 मई को फरीदाबाद में कोरोना के 30 नए मरीज मिले, अगर ये कोविड सेंटर शुरू हो गया होता तो यहां कुछ मरीज आते और वे इस आक्सीजन कंसनट्रेटर का इस्तेमाल करते। आईएमए ने सरकारी बीके अस्पताल को भी दस ही कंसनट्रेटर भेंट किए हैं लेकिन उनका फौरन इस्तेमाल शुरू भी हो गया। लेकिन श्रीराम धर्मार्थ अस्पताल में भेजे गए कंसनट्रेटर ऐसे ही पड़े हुए हैं और उनका कोई इस्तेमाल नहीं हो रहा है। विधायक सीमा त्रिखा भी कंसनट्रेटर भेंट किए जाने के समय श्रीराम धर्मार्थ अस्पताल पहुंची थीं। उस मौके पर भी वह कहती हुई मिलीं कि बस कोविड सेंटर शुरू ही होने वाला है। लेकिन मरीजों का दूर-दूर तक कोई पता नहीं है।

मौत हुई तो मुआवजा कौन देगा

श्रीराम धर्मार्थ अस्पताल में कोविड सेंटर के देर से शुरू होने में एक और भी तकनीकी समस्या आ रही है। अगर किसी कोरोना मरीज की यहां मौत हो जाती है और उसके परिवार के लोग लापरवाही का आरोप लगाते हैं तो उसका हर्जाना या मुआवजा कौन भरेगा। कोविड सेंटर को विधायक सीमा त्रिखा या कंवल खत्री तो चलाएंगे नहीं, ऐसे में कौन सी एजेंसी यहां पर होने वाली किसी मौत की जिम्मेदारी लेगी। कम से कम सीएमओ एक प्राइवेट जगह चल रहे कोविड सेंटर में किसी मौत की जिम्मेदारी क्यों लेंगे। कंवल खत्री गुट इस जिम्मेदारी से पीछा छुड़ाना चाहता है, वह चाहता है कि बीके अस्पताल और उसके सीएमओ इस तरह की जिम्मेदारी संभालें। देखने में यह तकनीकी समस्या बड़ी नहीं है लेकिन घटना होने पर गंभीर जरूर हो जाएगी।

प्रशासन बेनकाब हुआ

जिला प्रशासन और सीएमओ दफ्तर ने राजनीतिक दबाव में आकर यहां जबरन कंवल खत्री गुट को घुसा तो दिया लेकिन उसे यह समझ नहीं आ रहा है कि वो इस कथित कोविड सेंटर के लिए डॉक्टरों और नर्सिंग स्टाफ का इंतजाम कहां से करे। उनके पास वैसे ही स्टाफ की कमी चल रही है। वैसे भी अब कोरोना की रफ्तार थम गई है और ज्यादा डिमांड नहीं है तो वह प्राइवेट सेंटर में अपना स्टाफ क्यों भेजेगा। कंवल खत्री गुट की रणनीति यह है कि बस यह समय किसी तरह बीत जाए तो वे यहां ओपीडी शुरू कर देंगे। प्रशासन पर चूंकि जबरदस्त राजनीतिक दबाव है इसलिए ओपीडी शुरू होने में जिला प्रशासन को क्या एतराज होगा।

विशाल भाटिया का नोटिस

उधर, श्रीराम चेरिटेबल सोसायटी के उपप्रधान विशाल भाटिया ने गुरुवार को अपने वकील के जरिए सभी संबंधित पक्षों को नोटिस भेजकर कहा है कि जब कोरोना पीक पर था तब उन्होंने यहां कोविड सेंटर शुरू करने की बात कही थी। लेकिन सीएमओ समेत किसी भी सरकारी अफसर ने उस अर्जी पर ध्यान नहीं दिया। अब एक निलंबित प्रधान की अर्जी पर यहां कोविड सेंटर शुरू करने की गतिविधि चलाई जा रही है। उन्होंने इस मामले में पुलिस प्रशासन से भी सहयोग मांगते हुए कहा है कि अस्पताल में गैरकानूनी और अवांछित तत्वों का प्रवेश रोका जाए।

अस्पताल के संस्थापक सदस्य एस. एम. हाशमी ने भी अपने वकील से इस सिलसिले में सलाह-मशविरा शुरू कर दिया है। अदालत में कंवल खत्री पर गबन का केस भी चल चुका है, जिसके चश्मदीद हाशमी हैं। इसी तरह हाशमी ने एक नोटिस रजिस्ट्रार सोसायटी के दफ्तर में भी भेजा हुआ है, जिसमें कंवल खत्री के तमाम फ्रॉड की जानकारी दी गई है। इस बीच, कंवल खत्री गुट ने कतिपय गोदी मीडिया में छपी खबरों में यह स्वीकार कर लिया है कि उनसे कुछ गलतियां हुईं हैं, जिसकी वजह से उन पर भ्रष्टाचार के आरोप लगे हैं। लेकिन उनके पास बेदाग होने का कोई सबूत नहीं है। इस तरह कंवल खत्री गुट ने गोदी मीडिया में यह स्वीकार कर लिया है कि उनके कार्यकाल में करप्शन हुई है।

जानते हैं कितने की दवा हम लोग खा गए ?

आवेश तिवारी

देश की टॉप 40 दवा कंपनियों ने अप्रैल माह में 17 हजार 402.89 करोड़ का कारोबार किया, यानि इतनी दवा हम हिन्दुस्तानी खा गए। अगर इसमे जेनरिक दवाओं की लागत को जोड़ दिया जाए तो यह लगभग 4 गुना होगा। आश्चर्यजनक यह रहा कि अप्रैल माह में देशवासी 2256 करोड़ की एंटीबायोटिक खा गए जिसमे अकेले एजिथ्रोमायसिन की बिक्री लगभग 300 फीसदी बढ़कर 200 करोड़ को थी। रेमडेसिविर की बिक्री में 999 फीसदी का इजाफा हुआ। वही बुखार की दवाओं में सर्वाधिक 1320 फीसदी का इजाफा हुआ।

यह सब वृध्दि उस स्थिति में हुई जब यह कहा जाता है कि कोविड की कोई दवा ही नही है। यह खरीदी उस वक्त में हुई जब रेमडेसीवीर को लगातार नाकामयाब बताया जा रहा है और उसका कोविड में इस्तेमाल रोकने की तैयारी चल रही है।। मेरे एक साथी डॉक्टर कहते हैं कि फार्मा कंपनियों ने सरकार की नाक के नीचे जनता को कैसे बेवकूफ बनाया है, वह चौंकाता है। फेबिफ्लू जैसी दावा जो सुअरों को खिलाई जाती है पब्लिक ने जम कर खाई। अगर देश की जनता का दवाओं में लगा इस धन के बराबरी की राशि ऑक्सीजन प्रबंधन में पहले खर्च कर दी जाती तो हालात दूसरे हो सकते थे। मत भूलिए जो खर्च देशवासियों ने एक माह में दवाओं पर किया, उससे 3 हजार करोड़ ज्यादा लागत में केंद्र सरकार सेंट्रल विस्टा प्रोजेक्ट बनवा रही थी।

देखी-सुनी

खबरीलाल

कोविड नहीं, भाजपाइयों को अपने दफ्तर की चिन्ता

फरीदाबाद में फैले कोविड19 को लेकर भाजपाई किस तरह सेवा में जुटे हैं, उसका ताजा उदाहरण 19 मई बुधवार को उस समय सामने आया, जब पार्टी के हरियाणा महासचिव (संगठन) रवीन्द्र राजू उस दिन फरीदाबाद आए। दरअसल, इस आपदा में भाजपा को फरीदाबाद में बनने वाले अपने दफ्तर की चिन्ता ज्यादा है। रवीन्द्र राजू इसी मिशन पर बुधवार को फरीदाबाद आए थे। फरीदाबाद पहुंचते ही उन्हें सेक्टर 15 में एपीजे स्कूल के पीछे उस जगह ले जाया गया, जहां सारे नियमों को ताक पर रखकर हूडा ने भाजपा को दफ्तर के लिए कौड़ियों के रेट पर प्लॉट दिया है। भाजपा के देशभक्त सूत्रों के मुताबिक रवीन्द्र राजू बार-बार यही पूछते रहे कि दफ्तर बनाने के लिए पैसे आदि का जुगाड़ कैसे होगा, इस समय तो हमारे दानदाता भी आर्थिक बोझ से दबे हुए हैं। व्यापार ठप पड़ा है। इस पर जिला भाजपा अध्यक्ष गोपाल शर्मा और हाल ही में प्रदेश भाजपा की सचिव बनाई गईं रेणु भाटिया ने उन्हें आश्वस्त किया कि वे चिन्ता न करें, केन्द्रीय मंत्री कृष्णपाल गूजर और हरियाणा के मंत्री मूलचंद शर्मा, धनकुबेर विधायक नरेन्द्र गुप्ता, राजेश नागर दफ्तर के बनाने में कोई कसर नहीं छोड़ेंगे। इसके अलावा हमारे कई बिल्डर शुभचिन्तक भी इस काम में मदद करेंगे। कई बिल्डर हाल ही में पार्टी से जुड़े हैं और वे धन लुटाने को तैयार हैं। हालांकि रवीन्द्र राजू ने भी भरोसा दिया कि वे केन्द्रीय नेतृत्व से बात करके, वहां से भी कुछ मदद दिलाने की कोशिश करेंगे। लेकिन फरीदाबाद के भाजपा नेताओं को खुद का दमखम दिखाना पड़ेगा। इस बैठक में मुख्यमंत्री के सलाहकार संदीप जोशी भी थे लेकिन वे ज्यादातर समय चुप-चुप रहे। संदीप जोशी खुद भी पहले पार्टी के महामंत्री रह चुके हैं। जोशी के अलावा जी. एल. शर्मा, सत्यप्रकाश जरावत भी इस बैठक में मौजूद थे। गोपाल शर्मा ने बहुत चालाकी से पार्टी के जमीनी कार्यकर्ताओं को प्रदेश संगठन महासचिव से दूर-दूर रखा, ताकि कोई शिकायत नहीं कर सके।

नीरज शर्मा: थोथा चना, बाजे घना

एनआईटी से कांग्रेस विधायक नीरज शर्मा आजकल कुछ ज्यादा ही बयानबाजी और उछलकूद मचा रहे हैं। लेकिन हाल ही में जब सेक्टर 30 में आक्सीजन ब्लैकमार्केटिंग का मामला सामने आया तो ये सज्जन भी मौके पर पहुंचे, पुलिस बुला ली लेकिन इन्होंने पुलिस को उस कालाबाजारी करने वाले के खिलाफ लिखित शिकायत तक नहीं दी। पुलिस को साफ बहाना मिल गया और उसने आक्सीजन ब्लैक में बेचने वाले पर केस दर्ज नहीं किया। हालांकि आक्सीजन की ब्लैकमार्केटिंग करने वाला ये कारोबारी एक मंत्री का नजदीकी है, नीरज शर्मा चाहते तो मीडिया के सामने उसका नाम लेकर मामले को बड़ा कर सकते थे। इस तरह सेक्टर 30 में आक्सीजन कालाबाजारी का यह मामला पूरी तरह दब गया। अभी नीरज शर्मा को सेक्टर 55 में एक डिस्पेंसरी की याद आई। उन्होंने अपने बयान में कहा कि जब उनके पिता शिवचरण शर्मा मंत्री थे तब उन्होंने उस जगह अस्पताल का शिलान्यास किया था। लेकिन फिर कांग्रेस सत्ता में रही नहीं तो मामला ठप हो गया और अब वहां डिस्पेंसरी खोली गई है। सवाल ये है कि नीरज शर्मा को अभी उस अस्पताल की याद क्यों आई। जब से विधायक बने हैं, उसी समय से इस मुद्दे के पीछे क्यों नहीं पड़े। बाकी श्रम मंत्री शिवचरण शर्मा के इतिहास से हर कोई परिचित है। नीरज शर्मा को ज्यादा उछलकूद मचाने की बजाय अपने पिता के छोड़े हुए कामों और मुद्दों को ज्यादा जोरशोर से उठाना चाहिए, अन्यथा जल्द ही उनकी छवि नाटकबाज विधायक की बन जाएगी।

किसे-किसे माना जाए व्यापारी नेता

डीसी यशपाल यादव और पुलिस कमिश्नर ओ. पी. सिंह समेत सारे अफसर इन दिनों इस बात से तंग हैं कि आखिर किस-किस व्यापारी नेता से वे मिलें और इसके साथ मंच साझा करें। पिछले दिनों व्यापार मंडल के अध्यक्ष जगदीश भाटिया पुलिस कमिश्नर को एक नंबर मार्केट ले आए और अपना रौब बाकी दुकानदारों को दिखा दिया। उसके बाद पुलिस कमिश्नर जगदीश भाटिया के अलावा किसी को व्यापारी नेता मानने को तैयार ही नहीं हैं। हालांकि उसके बाद कई सारे व्यापारी नेताओं ने पुलिस कमिश्नर से मिलने की कोशिश लेकिन वे बेचारे जनता को दिए जाने वाले समय में भी नहीं मिल पाए। हरियाणा व्यापार मंडल के जिला अध्यक्ष राम जुनेजा ने सोचा कि अगर किसी ने पुलिस कमिश्नर को पटा लिया है तो क्यों न वो डीसी से संपर्क साधें और अपने मंच पर बुलाये। जुनेजा ने दिमाग ये लगाया कि कई और मार्केट के प्रधानों को अपनी तरफ मिला लिया और डीसी से समय मांगा जा रहा है। लेकिन डीसी ने अभी तक टाइम नहीं दिया है। डीसी इस गफलत में हैं कि कौन से वाले व्यापारी नेता से मिला जाए और किससे नहीं। जुनेजा के साथ व्यापार मंडल बल्लभगढ़ के प्रधान प्रेम खट्टर, मार्केट सेक्टर 7 के प्रधान वासुदेव अरोड़ा और सेक्टर 10 मार्केट के प्रधान सागर दुआ के अलावा स्पेयर पार्ट्स मार्केट के प्रधान भी डीसी से मिलना चाहते हैं। दरअसल, कौन सी मार्केट खोली जाए कौन सी नहीं खोली जाए, इस पर डीसी को सलाह देना चाहते हैं।

पुलिस डरपोक है या आलोचना पसंद नहीं

फरीदाबाद पुलिस को शायद आलोचना पसंद नहीं है या फिर वो इतनी डरपोक है कि सोशल मीडिया पर आम लोगों को भी ब्लॉक कर देती है। पिछले दिनों उसने अपनी तीखी आलोचना के बाद कुछ पत्रकारों, समाजसेवियों और आरटीआई एक्टिविस्टों को ब्लॉक कर दिया था लेकिन 19 मई को तो हद ही हो गई। फरीदाबाद पुलिस ने संदीप सिंह नामक यूजर को ट्विटर पर ब्लॉक कर दिया। संदीप नामक इस यूजर के कुल 4 फॉलोअर हैं, यानी उसकी कोई ट्वीट वायरल तक नहीं हो सकती लेकिन पुलिस उससे इतनी डर गई है कि उसे ब्लॉक कर दिया है। संदीप सिंह की बॉयोग्राफी में सिर्फ इतना लिखा है कि वह भ्रष्टाचार के खिलाफ है। लगता है कि शायद उसकी इस लाइन को फरीदाबाद पुलिस ने पढ़ लिया और उसे फौरन ब्लॉक कर दिया। मजदूर मोर्चा ने संदीप सिंह नामक इस शख्स की ट्विटर हैंडल की जांच की तो पाया कि यह शख्स भ्रष्टाचार के मामले और जनता की समस्याएं लगातार उठाता रहता है। वो किसी से नहीं डरता और अपने ट्वीट में मुख्यमंत्री से लेकर प्रधानमंत्री तक को टैग करता है। फरीदाबाद को संदीप सिंह जैसे जागरुक नागरिकों की सख्त जरूरत है। फरीदाबाद पुलिस को ट्विटर पर करीब साढ़े 41 हजार लोग फॉलो करते हैं, आखिर उसे आम लोगों से सोशल मीडिया पर डर कैसा है।

प्रकाशक, मुद्रक एवं संपादक सतीश कुमार ने अपने स्वामित्व में एजीएस पब्लिकेशन्स, डी-67, सैक्टर-6, नोएडा से मुद्रित करवा कर 708 सैक्टर-14 फरीदाबाद से प्रकाशित किया। Postal Reg. No. L/H.R/FBD/463-06